CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी (पंजीकृत)

संक्षिप्त पूजा
विधि
सहित
त्रयोदशी व्रत,
सोमवार व्रत,
रूद्राभिषेक
महात्मय,

महाशिव
रात्रि
व्रत और
महामृत्युंजय
अभिषेक
प्रार्थना
ॐ नमः शिवाय

श्री संगमेश्वर महादेव मन्दिर, अरूणाय (जिला कुरूक्षेत्र)

प्रकाशक : ब्रह्मलीन श्रद्धेय बाबा शरण पुरी जी महाराज, महन्त गंगा पुरी जी महाराज ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महन्त गिरधर नारायण पुरी जी महाराज
के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

विषय सूची

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	शंकरः शं करोतु	ब्रह्मलीन श्रद्धेय बाबा शरण पुरी जी	1
2.	त्रयोदशी व्रत महात्मय	महन्त गंगा पुरी जी	3
3.	सोमवार व्रत कथा	महन्त विजय गिरि जी	12
4.	रूद्राभिषेक महात्मय	महन्त प्रभात पुरी जी	16
5.	महाशिव रात्रि व्रत	स्वामी हरिशचन्द्र पुरी जी	19
6.	महामृत्युंजय अभिषेक	सुभाष चन्द रत्न	21
7.	प्रार्थना		

पंचम संस्करण
विक्रमी संवत 2057 सन् 2000 ई
(सर्वाधिकार, प्रकाशकाधीन)

गुरू पूर्णिमा पर्व पर

संकलन कर्त्ता :-
सुभाष चन्द रत्न
एम. ए. एम. एड.,
डिपलोमा यू. अैन. आई. यू.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शंकरः शं: करोतु

आदि देव महादेव स्वयंभू पशुपति नीलकण्ठ भगवान आशुतोष शंकर भोले भण्डारी की सहस्त्रों नामों से स्तुति कर पुकारा जाता है पर प्रमुख नाम महेश्वर अर्थत् 'महान-ईश्वर' या महादेव (महान् देवता) कहकर पुकारने में उनकी महानता घोषित की है जैसे आम लोगों को पुरूष कहकर पुकारते हैं परन्तु कुछेक को महापुरूष के नाम से पुकारते हैं । सर्वविदित है कि जिन पुरूषों ने त्याग, तपस्या के द्वारा, पुरूषार्थ के द्वारा समाज का कल्याण किया है उनको महापुरूषों की उपाधि से अलंकृत्त किया जाता है । ऐसे ही समस्त देवों में त्याग, तपस्या व पुरूषार्थ का आदर्श जगत के कल्याण हेतु भगवान शंकर ने प्रस्तुत किया । सबसे बड़ा त्याग संसार के वैभव की समस्त आसक्तियों को त्यागकर स्वयं एकान्त श्मशान भूमि में विराजे हैं या कैलाश पर्वत पर बड़ के नीचे स्माधिस्थ है । सबसे बड़ा पुरूषार्थ समुद्र मंथन से निकले हलाहल विष को देखकर जब समस्त देवगण चिन्तित हो उठे तो जगत के कल्याण की कामना से स्वयं उस हलाहल का पान किया । इसी कल्याणकारी देव को शिव या शंकर अर्थात् कल्याणकारी कल्याण करने वाला कहा जाता है । आज भी वे उनकी उपासना करने वाले सभी उपासकों को मनवांछित वस्तु प्रदान कर सबका कल्याण करते हैं । भगवान शिव की उपासना करने के कई प्रकार हैं परन्तु त्र्योदशी व्रत, सोमवार व्रत व रूद्राभिषेक विधि सर्वोत्तम है और सर्व सुलभ व सरल है ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भगवान शंकर कहते हैं - कि वे पुरूष परंगत है जिन्होंने कि, निविकल्प, निरामय, नित्यानन्दमय, शान्त, आदि अन्तरहित शिव तत्व को जान लिया है । जो काम भोगों से विरक्त होकर परतत्व शिव में अहैतु की भक्ति करते हैं उनकी मुक्ति हो गई इसमें संशय नहीं है । जो विषयों के संकल्प से शिव में प्रीति करते हैं वे विषयों को भोगते हुए भी उसमें लिप्त नहीं होते । किसी भी भाव से शिव भक्ति करें वह नष्ट नहीं होता, कालान्तर में परमपद को पा जाता है । जो परस्थान तो जाना चाहता हो पर विषयों को नहीं छोड़ सकता हो वह शरीर से शिव पूजन करता रहे, तो भोग के अन्त में शिव को पा जाता है । प्रायः, मनुष्य विषय वासना का त्याग नहीं कर सकते इसी कारण उनके लिए शिव के पवित्र कर्म करना ही कामधेनु हैं । जो मायामय संसार में भी चिर सुख भोग देह के अन्त में मुक्ति चाहते हैं उनको यही धर्म कहा गया है कि सदैव शिव का पूजन अर्चन करता रहे । लोक में शिव पूजा सदा स्वर्ग और अपवर्ग की हेतु है विशेष कर सोमवार और प्रदोष, व श्रेष्ठ शिव तेरस में विशेष फलदायक है । शिवतेरस वही मानी जाती है जिसमें शिवरात्रि पूजन का विधान है । शास्त्र मत से यह तिथि वही सत्या है और ग्राहय है जिसमें अर्ध रात्रि में चतुदर्शी का योग हो उसी दिन को प्रत्येक मास की कृष्ण पक्ष की शिवरात्रि की संज्ञा दी गई है ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

त्र्योदशी व्रत महात्मय

'त्र्योदशीव्रत' सांयकाल को किया जाता है । जिस दिन सांयकाल के समय त्र्योदशी तिथि हो उस दिन प्रदोषकाल-अर्थात् सांयकाल के बाद तथा रात्रि से पूर्व के समय में भगवान शंकर का पूजन करना चाहिए । दूसरा विधान कृष्णपक्ष में दिन भर त्र्योदशी तिथि रात्रि में चतुदर्शी तिथि हो उस समय भी यह व्रत किया जाता है उसको शिवतेरस अर्थात् शिवरात्रि के नाम से पुकारा जाता है ।

त्र्योदशी के दिन प्रात:काल उठकर स्नानादि से निवृत होकर शुद्ध वस्त्र धारण करें । घर में हो तो शिव-पार्वती की प्रतिमा एक सुन्दर मण्डप को रंगीन वस्त्रों से सुसज्जित कर उसमें स्थापित करें और विधिवत शिव-पार्वती का पूजन करें । इसके पश्चात् ''ॐ नम: शिवाय'' मन्त्र का 1008 बार या कम से कम 108 बार अवश्य उच्चारण करें । किसी याजक ब्राह्मण को भोजन करावें और दक्षिणा से सन्तुष्ट करें । व्रत की पूर्णता कि लिए अग्नि में 108 बार आहुति भी देनी चाहिए । तदनान्तर ब्राह्मण से आर्शीवाद प्राप्त कर स्वयं अपने बन्धु-वान्धवों को साथ लेकर मन में भगवान शंकर का स्मरण करते हुए स्वयं भी भोजन करें । इस प्रकार व्रत करने वाला व्रती पुत्र पौत्रादि से युक्त होता है तथा धन-सम्पति से सम्पन्न होकर आरोग्य लाभ करता है । इसके अतिरिक्त अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता हुआ सम्पूर्ण पापों से मुक्त हो जाता है । अन्त में शिवलोक को प्राप्त करता है ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस विषय में एक पुरातन इतिहास है :-

विदर्भ प्रदेश में सत्यरथ नाम के एक परम शिव भक्त, पराक्रमी और तेजस्वी राजा हुये थे । उन्होंने अनेक वर्षों तक राज्य किया, परन्तु किसी एक दिन भी शिव पूजन में अन्तर न आने दिया ।

एक बार शाल्व देश के राजा ने अन्य राजाओं को साथ लेकर विदर्भ पर चढ़ाई कर दी । सात दिन तक घमासान युद्ध होता रहा । अन्त में दैवगति से सत्यरथ को पराजित होना पड़ा, वे कहीं भाग निकले और शत्रु नगर में घुस पड़े । जब यह समाचार रानी को मालूम हुआ, तब वह चुपके से महल से निकल पड़ी और उसने जंगल का रास्ता लिया । राजमहल में रहने वाली रानी, नाना प्रकार के कष्टों को सहन करती हुई वन में बढ़ी चली जा रही थी । उसको नौ मास का गर्भ था । एक दिन अरण्य में अचानक ही उसे पुत्र रत्न को प्राप्ति हुई । बच्चे को वहीं अकेला छोड़कर वह प्यास के कारण पानी की इच्छा से वन के दूसरे भाग में एक सरोवर के पास गई, पर संयोग से वहां उसे मगर निगल गया ।

दैव योग से उसी समय उमा नाम की एक विधवा ब्राह्मणी अपने एक वर्ष के बालक को गोद में लिए हुए उसी रास्ते से होकर निकली । उसे बिना नाल कटे हुए उस बच्चे को देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ । वह विचार करने लगी कि यदि इस बच्चे को मैं अपने घर ले जाउँ तो लोग मुझे लाछित करेंगे और न ले जाउँ तो इसे यहाँ बाघ-शेर खा जायेंगे । इसकी रक्षा न करने पर मुझे पाप लगेगा । उस समय भगवान शंकर वहां प्रकट हुए और उस विधवा को कहने लगे- ''इस बच्चे को तू अपने घर ले जा, अपने पुत्र के समान

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ही इसकी रक्षा करना और लोगों में इस बात को प्रकट न करना, इससे तेरे भाग्य का उदय होगा ।'' इतना कहकर शिव जी अंतर्ध्यान हो गए । ब्राह्मणी ने अपने पुत्र का नाम शुचिवृत और राजपुत्र का नाम धर्मगुप्त रखा ।

यह विधवा दोनों को साथ ले, उस बच्चे के माता-पिता को ढूंढते शाण्डिल्य ऋषि के आश्रम में पहुँची । ऋषि ने बतलाया कि ''राजा सत्यरथ का देहान्त हो गया है । पूर्वजन्म में प्रदोष व्रत को अधूरा छोड़ने के कारण ही उनकी ऐसी गति हुई है । रानी ने पूर्व जन्म में अपनी सौत को मारा था, इस कारण इस जन्म में उसने मगर के रूप में रानी से बदला लिया है ।''

ब्राह्मणी ने दोनों बच्चों को ऋषि के चरणों में डाल दिया । ऋषि ने उन्हें शिव पंञ्चाक्षर (ओम नमः शिवाय) मंत्र की दीक्षा देकर प्रदोष व्रत करने का उपदेश दिया । इसके बाद बालकों ने ऋषि का आश्रम छोड़कर एक चक्रा नगरी में निवास किया और वहां वे चार महीने तक शिवाराधन करते रहे । दैवात एक दिन शुचिवृत को नदी के तीर पर खेलते समय अशर्फियों से भरा हुआ एक स्वर्ण कलश मिला । वह घर गया । यह देख कर माता को अत्यन्त ही आनन्द हुआ । यह थी प्रदोष व्रत की महिमा ।

कलश को भूमि पर रख कर अपनी माता से बोला-हे माता, शिव जी की महिमा तो देखो, भगवान ने इस घड़े के रूप में मुझे अपार सम्पति दी है ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उस की माता घड़े को देखकर आश्चर्य करने लगी और राजसुत को बुलाकर कहा बेटे मेरी बात सुनो। तुम दोनों इस धन को आधा-आधा बांट लो ।

माता की बात सुनकर शुचिवृत अत्यन्त प्रसन्न हुआ परन्तु राजसुत ने अपनी असहमति प्रकट करते हुए कहा-हे मां ! यह धन तेरे पुत्र के पुण्य से उसे प्राप्त हुआ है, मैं इसमें किसी प्रकार का हिस्सा नहीं लेना चाहता । क्योंकि अपने किये हुए कर्म का फल मनुष्य स्वयं ही भोगता है ।

इस प्रकार शिव पूजन करते हुए एक ही घर में उन्हें एक वर्ष व्यतीत हो गया, एक दिन राज कुमार ब्राहाणी के पुत्र के साथ बसंत ऋतु में वन बिहार करने के लिए गया । वे जब साथ-साथ वन में बहुत दूर निकल गये तो उन्हें वहां पर सैकड़ों गन्धर्व कन्याएँ खेलती हुई दिखाई पड़ी ।

शुचिवृत उन गंधर्व कन्याओं को क्रीड़ारत देखकर राजकुमार से बोला, यहां पर कन्याएँ विहार कर रही है । इस लिए हम लोगों को अब और आगे नहीं जाना चाहिए । क्योंकि ये गन्धर्व कन्याएँ शीघ्र ही मनुष्यों के मन को मोहित कर लेती हैं इसलिए मैं तो इन कन्याओं से दूर ही रहूंगा ।

परन्तु राजकुमार उसकी बात अनसुनी कर कन्याओं के विहार स्थल में निर्भीक भाव से अकेला ही चला गया । उन सभी गंधर्व कन्याओं में प्रधान सुन्दरी उस आये हुए राजकुमार को देखकर मन में विचार करने लगी कि कामदेव के समान सुन्दर रूप वाला यह राजकुमार कौन है ? उस राजकुमार से बातचीत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

करने के उद्देश्य से उस सुन्दरी ने अपनी सखियों से कहा-सखियो, तुम निकट के बाग में जाकर अशोक चम्पक, मौलसिरी आदि के ताजे फूल तोड़ लाओ । तब तक मैं तुम्हारी प्रतीक्षा में यही रूकी रहूंगी ।

उस गन्धर्व कुमारी की बात सुनते ही सब सखियां वहां से चली गई । सखियों के जाने के बाद वह गन्धर्व कन्या उस राजकुमार को स्थिर दृष्टि से देखने लगी । उन दोनों में प्रेम संचार होने लगा । गन्धर्व कन्या ने राजकुमार को बैठने के लिए आसन दिया । प्रेमालाप के कारण राजकुमार के सहवास के लिए सुन्दरी व्याकुल हो उठी और राजकुमार से प्रश्न करने लगी, ''हे कमल समान नेत्रों वाले, किस देश के रहने वाले हो ? आपका यहां आना कैसे हुआ ?''

गन्धर्व कन्या की बात सुनकर राजकुमार ने उत्तर दिया मैं विदर्भ राजा का पुत्र हूं । मेरे माता-पिता स्वर्गवास हो चुके हैं । शत्रुओं ने मुझ से मेरा राज्य हरण कर लिया है ।

राजकुमार ने अपना परिचय देकर उस गन्धर्व कन्या से पूछा आप कौन हैं ? किसकी पुत्री हैं ? और इस वन में किस उद्देश्य से आई हैं ? आप मुझ से क्या कहना चाहती हैं ?

राजकुमार की बात सुनकर गन्धर्व पुत्री ने कहा, ''मैं विद्रविक नामक गन्धर्व की पुत्री अंशुमती हूं। मैं आप को देखकर आपसे बातचीत करने के लिए यहां पर सखियों का साथ छोड़कर रह गई हूं । बीन विद्या में बहुत ही निपुण हूं, मेरे गान पर सभी देवांगनाएं रीझ जाती हैं । मैं चाहती हूं कि आपका और मेरा प्रेम सर्वदा बना रहे ।'' इतनी बात कह कर उस गन्धर्व कन्या ने अपने गले का बहुमुल्य हार राजकुमार के गले में डाल दिया । वह हार उन दोनों के प्रेम का प्रतीक बन गया ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इसके पश्चात राजकुमार ने उस कन्या से कहा-हे सुन्दरी ! तुमने जो कुछ कहा है वह सब सत्य है। लेकिन आप राजविहीन राजकुमार के साथ कैसे रह सकेगी ? आप अपने पिता की अनुमति लिए बिना मेरे साथ कैसे चल सकेंगी ? राजकुमार की बात पर वह कन्या मुस्करा कर कहने लगी-''जो कुछ भी हो, मैं अपनी इच्छा से ही आपका वरण करूंगी। अब आप परसों प्रातःकाल यहाँ पर आइएगा। मेरी बात कभी झूठ नहीं हो सकती।'' गन्धर्व कन्या ऐसा कहकर पुनः अपनी सखियों के पास चली गई।

इधर वह राजकुमार भी शुचिवृत के पास जा पहूँचा और उसने अपना सारा वृत्तांत कह सुनाया। इसके बाद वे दोनों घर को लौट गये। वहां पहुंचकर उन लोगों ने ब्राह्मणी से सब हाल कहा जिसे सुनकर ब्राह्मणी भी हर्षित हुई।

गन्धर्व कन्या द्वारा निश्चित दिन को वह राजकुमार शुचिवृत के साथ उसी वन में पहुंचा। वहां पहुंचकर उन लोगों ने देखा-गंधर्वराज अपनी पुत्री अंशुमती के साथ उपस्थित होकर प्रतीक्षा में बैठे हैं। गंधर्वराज ने उन दोनों कुमारों का अभिनन्दन करके उन्हें सुन्दर आसन पर बिठाया और राजकुमार से कहा-''मैं परसों कैलाश पुरी को गया था। वहां पर भगवान शंकर पार्वती के सहित विराजमान थे।'' उन्होंने मुझको पास बुलाकर कहा-''पृथ्वी पर राज्यच्युत होकर धर्मगुप्त नामक राजकुमार घूम रहा है। शत्रुओं ने उसके वंश को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया है। वह कुमार सदा ही भक्ति पूर्वक मेरी सेवा किया करता है। इसलिए तुम उसकी सहायता करो, जिससे वह अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सके। इसलिए मैं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भगवान शिव की आज्ञा से पुत्री अंशुमती आपको सौंपता हूँ । मैं शत्रुओं के हाथ में गये हुए आपके राज्य को वापिस दिला दूंगा । आप इस कन्या के साथ दस हजार वर्षों तक सुख भोगकर शिवलोक को चले जाओगे । शिवलोक में जाने पर भी मेरी पुत्री इसी शरीर में आपके साथ रहेगी ।'' इतना कहकर गंधर्वराज ने अपनी पुत्री का विवाह राजकुमार के साथ कर दिया । दहेज में अनेकों बहुमूल्य रत्न, वस्त्र, रथ आदि प्रदान किये । इसके अतिरिक्त दास-दासियां तथा शत्रुओं पर विजय पाने के लिए गंधर्वों की चतुरगिणी सेना भी दी ।

राजकुमार ने गन्धर्वों की सहायता से शत्रुओं को नष्ट कर दिया और वह अपने नगर में प्रविष्ट हुआ। मंत्रियों ने राजकुमार को सिंहासन पर बैठाकर राज्यभिषेक किया । अब वह राजकुमार राजसुख भोगने लगा। जिस दरिद्र ब्राह्मणी ने इसका पालन-पोषण किया था, उसे ही राजमाता के पद पर आसीन किया गया वह शुचिव्रत ही उसका छोटा भाई बना । इस प्रकार प्रदोष व्रत में शिव-पूजन के प्रभाव से वह दुर्लभ पद को प्राप्त हुआ । जो मनुष्य प्रदोष काल में अथवा नित्य इस कथा को श्रवण करता है, वह निश्चय ही सभी कष्टों से मुक्त हो जाता है और अन्त में परम पद का अधिकारी बनता है ।

दूसरा विधान - शिवतेरस के दिन जब चतुदर्शी रात्रि व्यापिनी हो उस समय उपरोक्त प्रकार से दिन में भगवान शंकर का विधिवत् पूजन करना चाहिये । दिनभर निराहार रह कर रात्रि के चारों प्रहर में भगवान की पूजा-अर्चना जागरण व वन्दना करें और दिवस व रात्रि पर्यन्त पञ्चाक्षर मन्त्र ''ॐ नमः शिवाय'' का

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जाप करता रहे । ''ॐ नमः शिवाय'' मन्त्र की महिमा का वर्णन क्या किया जाये ? इस मन्त्र की महिमा के प्रभाव से तो राजा दाशार्ह निष्पाप होकर भगवान शिव के सायुज्जय को प्राप्त हो गये ।

कथा – मथुरा नगर में दाशार्ह नामक एक यदुवंशी राज्य करते थे । वे बड़े ही गुणवान उदार और शूर थे । उनके राज्य में प्रजा बहुत ही सुख शान्ति से रहती थी । पड़ोस के सभी राजा उनका लोहा मानते थे । राजा की स्त्री भी अत्यन्त रूपवतीं और पतिव्रता थी । उसका नाम था कलावती । एक दिन राजा अपनी रानी के पास रंगमहल में गये । रानी उस दिन त्र्योदशी का व्रत करके शिव की उपासना में रत थी । उसने राजा को पास आने से मना किया । क्योंकि शास्त्र का आदेश है कि व्रतस्थ स्त्री पुरूष का मिलन नहीं होना चाहिये । परन्तु राजा नहीं माने और रानी का आलिंगन करने के लिए आगे बढ़े, किन्तु जैसे ही वे रानी के समीप़ पहुंचे उनके शरीर ताप में बुरी तरह जलने लगे । राजा चकित हुए और रानी से इसका कारण पूछा ।

रानी ने उत्तर दिया महाराज मैंने शिव मन्त्र की दीक्षा ली है उसी के जप की महिमा है कि कोई भी मनुष्य मुझे व्रत से च्युत नहीं कर सकता । आप भी चाहें तो गर्गाचार्य जी से इस मन्त्र की दीक्षा ले अपने को निष्पाप और सुरक्षित बना सकते हैं ।

कलावती के मुख से इस बात को सुनते ही राजा प्रसन्न हुए और गर्गाचार्य जी के आश्रम पर पहुंचे। मुनि को साष्टांग प्रणाम किया और उनसे पञ्चाक्षर शिव मन्त्र के उपदेश के लिए प्रार्थना की, मुनि ने राजा को यमुना में स्नान करवाकर भगवान शंकर की षोडशोपचार पूजा करवाकर अपना वहदहस्त राजा के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मस्तक पर रखकर पञ्चाक्षर मन्त्र का उपदेश दिया । पञ्चाक्षर मन्त्र के कान में पड़ते ही राजा के हृदयकाश में ज्ञान सूर्य का उदय हो गया और उनका अज्ञानन्धकार नष्ट हो गया । उस मन्त्र का ऐसा विलक्षण प्रभाव हुआ कि क्षणभर में सारे पाप उसके शरीर से कौओं के रूप में बाहर निकल पड़े । उनमें से कितनों के पंख जले हुए थे और कितने ही तड़पकर पृथ्वी पर गिरते जाते थे । जिस प्रकार दावाग्नि से कंटक वन नष्ट हो जाता है, वैसे ही पाप रूपी कौओं के भस्मीभूत होने से राजा को महान आश्चर्य हुआ । राजा ने मुनि से पूछा कि ''यकायक मेरा शरीर ऐसा दिव्य कैसे हो गया ?'' मुनि वोले-राजन आपके शरीर से जो कौए निकले हैं, वे जन्म जमान्तर के पाप हैं राजा ने शिव मन्त्र के उपदेश के द्वारा निष्पाप बनाने वाले उन परम गुरू गर्गाचार्य को बारम्बार प्रणाम कर उनसे विदा ली और अपने नगर को लौट आये । जीवन भर भगवान शंकर के परम मन्त्र का जाप करते रहे तथा त्र्योदशी व सोमवार का व्रत कर अपने जीवन को निष्पाप कर अन्त में शिवलोक को प्राप्त हुए ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सोमवार व्रत कथा

श्रावण, चैत्र, वैशाख, कार्तिक और मार्गशीर्ष के पहले सोमवार से इस उत्तम व्रत को ग्रहण करना चाहिये । जो केवल सोमवार को भी शिवार्उन करते हैं उन्हें इस लोक ओर परलोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं है । शुचिता और संयम के साथ सोमवार के दिन उपवास करके वैदिक व लौकिक मन्त्रों से विधि के साथ शिव की पूजा करें । ब्रह्मचारी गृहस्थ, कन्या भतृमृती विधवा को भी शिव को पूजकर अभीष्ट वर पा सकता है । इस विषय में एक श्रवण सुन्दर कथा कहते हैं । जिसे सुनते ही शिव भक्ति और मुक्ति हो जाती है ।

आर्यावर्त में चित्रवर्मा नाम के एक धर्मात्मा राजा थे । वह दुष्टों के लिए साक्षात धर्मराज ही थे । जो धर्म की मर्यादाओं का रक्षक और उच्च्श्रृंखलों का शासक सब यज्ञों का याजक और अरणगतों का पूरा रक्षक था । सभी पुण्यों का करता, सब संपत्तियों का दाता वैरियों के समुदाय को जीतने वाला तथा शिव और मुकन्द का भक्त था । उसकी सभी पत्नियां सुन्दर, सुशील व योग्य थीं पर किसी के पुत्र न हुआ, चिरकाल तक चाहने के बाद एक सुन्दर कन्या प्राप्त हुई । उसे वह कन्या ऐसे मिली मानों हिमवान को पार्वती मिली है। राजा ने चुने हुए ज्योतिषियों को बुलाकर कौतुक से कन्या के शुभाशुभ को पूछने लगा । उन सब में जो जातक कर्म का विशेषज्ञ था बोला, हे राजन् आपकी कन्या का सीमन्तिनी नाम है । उमा की तरह मांगलिक तथा दमयन्ती की सी रूपवान है । समस्त कलाओं को जानने वाली, महागुण वाली, उत्तम सन्नति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाली, पवित्रता, उत्तम काँती वाली तथा चाँदनी की तरह मनोहर है । दस हजार वर्ष पति के साथ जीयेगी, आठ सुयोग्य पुत्रों को पैदा करके परम सुख पावेगी । यह सुनकर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ । एक निर्भय धीर विद्वान यह भी बोला कि चौहदवें वर्ष में विधवा हो जायेगी । राजा को उसके यह वचन वज्र के समान कठोर लगे । राजा चिन्ता से व्याकुल हो गया । अन्त में विद्वानों को विदा कर दैव इच्छा वलीयासी भगवान की जो इच्छा होती है सो होती है । यह सोचकर निश्चिन्त हो गया । बालिका सीमन्तिनी भी दिनों दिन बढ़ने लगी । शैशव को पाकर बाल्यवस्था में अपनी सखी के मुख से होने वाले वैधव्य की बात सुनी जिससे एकदम दुखी हो गई और विचारने लगी कि क्या करूं ? पीछे याज्ञवलक्य जी की पत्नी मैत्रेयी जी के पास जाकर उनसे कोई उपाय पूछा कि हे मां ! मैं भयभीत होकर तेरे चरणों में आई हूं मुझे सौभाग्य करने वाला कोई उपाय बता दो । शरण आई हुई उस राज कन्या से मुनिपत्नी कहने लगी - शिवसहित भवानी की शरण जा । सोमवार के दिन एकाग्रचित से शिव गौरी का पूजन कर, उस दिन उपवास करना, भलीभांति स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहनना, मितभाषिणी रहकर निश्चल पति से यथोचित पूजा कर । इस प्रकार एक साल तक इस सोमवार के व्रत को पूर्ण करके उद्यापन अवश्य करना चाहिये । मैत्रेयी इस प्रकार राजकन्या को समझाकर चली गई। सीमन्तिनी ने वैसा ही किया ।

राजा नल की पत्नी दमयन्ती के गर्भ से इन्द्रसेना नाम की कन्या पैदा हुई थी । उसी इन्द्रसेना का चन्द्र के समान चन्द्रांगद नाम का एक पुत्र था । गुरू की आज्ञा लेकर राजा चित्रवर्मा ने चन्द्रांगद को अपनी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कन्या सीमन्तिनी ब्याह दी । राजकुमार चन्द्रांगद उस समय पाणिग्रहण करके कई माह तक ससुराल में ही रहा ।

एक दिन चन्द्रांगद एक बड़ी सेना को साथ लेकर आखेट के लिये बाहर निकला । यमुना किनारे पहुंचकर उसने एक नौका ली और अकेला जल क्रीड़ा करने लगा । सहसा एक भयंकर तूफान आया और उस नौका को मझधार में ले जाकर डूबो दिया । इस दुःखद घटना को देखकर दोनों किनारों पर हाहाकार मच गया । सीमन्तिनी ने जब दुःखद समाचार को सुना–भूमि में मूर्च्छित होकर गिर गई । उसके शोक का पारावार न रहा । दैव दुर्विवाक से शत्रुओं ने चन्द्रांगद के राज्य पर आक्रमण कर दिया और राज्य का अपहरण कर लिया । सीमन्तिनी को भी शत्रुओं ने बंदी बनाकर कारागार में डाल दिया । परन्तु मुनिपत्नी मैत्रेयी जी ने जो सोमवार व्रत का उपदेश दिया था, सीमन्तिनी ने विधवा होने पर भी अपना व्रत नहीं छोड़ा, वह दिन रात शिव स्मरण करती रही । इस प्रकार ज्योतिषी के बताये हुए चौदहवें वर्ष में घोर क्लेश पाकर भी शिव चरणों का ध्यान करते तीन वर्ष व्यतीत हो गये ।

उधर यमुना में डूबा हुआ चन्द्रांगद नाग कन्याओं द्वारा देखा गया वह उसे नीचे ही नीचे पाताल लोक में ले गयी । वहां के राजा तक्षक ने उस राजकुमार को देखकर पूछा कि तुम किसके लड़के हो एवं कौन हो ? किस देश से आये हो ? चन्द्रांगद ने सारा वृतांत बता दिया । तक्षक ने पूछा कि हे राजकुमार तुम सब देवों में सदा कौन से देव की पूजा किया करते हो ? राजकुमार बोला जो देव सब देवों में महादेव है उसी विश्वात्मा उमापति की मैं पूजा करता हूं । यह सुनकर तक्षक प्रसन्न हुआ उसने चन्द्रांगद से

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कहा-परम कृपालु शिव की भक्ति करने से कोई भी दुर्लभ नहीं रह जाती । मैं तुझसे बहुत प्रसन्न हूं तू जो चाहे मांग ले । चन्द्रांगद ने कहा मैं अपने माता-पिता का एक ही पुत्र हूँ । मुझे उनके चरणों के दर्शन करने की प्रबल इच्छा है । मेरी भक्तिमती रानी सीमन्तिनी मेरे वियोग में प्राण त्याग देगी इसलिए आप कृपा करके शीघ्र मुझे मेरे घर पहुंचा दीजिए - नागराज तक्षक ने प्रसन्न होकर उसको वर दिया कि 'जाओ, तुम्हें बारह हाथियों का बल प्राप्त हो जायेगा और एक घोड़ा तथा चिन्तामणि नामक मणी प्रदान कर एक सर्प के साथ यमुना के किनारे पहुंचा दिया' ।

उसी समय सुन्दरी सीमन्तिनी अपनी सहेलियों के साथ यमुना स्नान करने आई हुई थी । उसने किनारे पर बिहार करते राजकुमार को देखा । अपने सामने पूर्व की अपेक्षा अधिक तेजस्वी और रूपवान चन्द्रांगद को देखकर विस्मय के कारण स्तब्ध सी रह गई । सोमवार के दिन शिव पूजा और व्रत के प्रभाव से भगवान शिव की कृपा से सीमान्तिनी ने अपने पति को प्राप्त किया और विचारने लगी कि मुनिपत्नी ने जो कहा था कि घोर आपत्ति में भी इस व्रत को करते रहना, उत्तम फल मिलेगा । मैंने आज उसका फल पा लिया ।

चन्द्रांगद ने भगवान शिव की कृपा से खोया हुआ राज्य भी प्राप्त कर लिया और सीमन्तिनी के साथ दस हजार वर्ष तक राज्य करते हुए सुख ऐश्वर्य प्राप्त किया । पीछे शिवलोक जा शिव का साक्षात नित्यानुभव करने लगे । यह सब सोमवार व्रत की महिमा के प्रभाव से ही हुआ ।

ॐ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रूद्राभिषेक महात्मय

शिव पूजा के अन्तर्गत रूद्राभिषेक की महिमा का वर्णन स्थान-स्थान पर आया है । विशेष कर श्रावण मास में प्रदोष के दिन प्रत्येक मास की शिवरात्रि तिथि तथा सोमवार के दिन व्रती को रूद्राभिषेक करने से विशेष फल की प्रापति होती है ।

सोमवारे व्रत कार्य श्रावणे चै यथाविधि ।
शक्तावुपोषणं कार्यमथबा निशिभौजनम् ।।

सोमवार के व्रत में उपवास व एक समय का नियम रखकर व्रत और रूद्राभिषेक करने से विशेष फल की प्राप्ति होती है ।

पूजा-विधि - गणपति, पार्वती नन्दीश्वर, वीरभद्र, कार्तिकेय, कुबेर और कीर्तिमुख-प्रभृतिशिव पार्षदों की पञ्चोपचार पूजा कर भगवान शंकर को पाद्य, अर्व्य, आचमन, सामान्य स्नान तथा दुग्ध, दधि, घृत, मधु, शंकरा पंच्चामृत स्नान समर्पित करके शुद्ध जल से स्नान करावे तदनन्तर रूदाष्टाध्यायी 'ॐ नमस्ते रूद्र (.....)' 'मन्त्रों से या केवल' 'ॐ नमः शिवाय' 'पन्चाक्षर मन्त्र से अभिषेक करें- (अर्थात दुग्ध धारा या जल धारा दे) फिर क्रमशः, विजया वस्त्र, उपवस्त्र यज्ञोपवीत, अक्षत, गन्ध, पुष्प,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पुष्पमाला, विल्बपत्र, तुलसीदल, दूर्वा, आभूषण, इत्र, धूप, दीप, नैवेद्य, मध्यपानीय, जल, ऋतुफल, आचमन, अखण्ड ऋतुफल, (नारीयल) ताबुल (पान) पुंगीफल (सुपारी) और दक्षिणा अर्पित करके आरती करें ।

उपर्युक्त विधि से पूजा अभिषेक कर अन्त में प्रार्थना करें । पुराणों में रूद्राभिषेक तथा रूद्राक्ष की अपार महिमा वर्णित है इस विषय में एक छोटा सा इतिहास बताते हैं ।

कथा – काश्मीर देश के राजा भद्रसेन का पुत्र 'सुधर्मा' था और मन्त्री का पुत्र 'तारक' था । दोंनो ही महान शिव भक्त थे तथा पितृ भक्त थे । दोनों ही नित्य सर्वाङ्ग में विभूति धारण करते । गले में रूद्राक्ष की माला पहनते और सदा शिव पूजन में ही लगे रहते । इस निमित कुरू जागल प्रदेश के पौराणिक शिव तीर्थो स्थाणु तीर्थ में 'स्थाण्वीश्वर' तथा अरूणा तीर्थ में 'सङ्मेश्वर' की यात्रा कर शिव का रूद्राभिषेक तथा रात्रि जागरण करते और अपने को धन्य मानते थे । इसी प्रकार उन दोनों का निरन्तर पूजन का यात्राक्रम चला करता था । एक बार राजा भद्रसेन के यहां महामुनि पराशर जी पधारे । महामुनि के मुख से राजा को यह ज्ञात हुआ कि आज से सातवें दिन सुधर्मा को अकाल मृत्यु होने वाली है । इसे सुनकर राजा को महान शोक हुआ । राजा के पूछने पर पराशर जी ने बतलाया कि ''यदि दस हजार रूद्राबर्तन से भगवान शंकर पर अखण्ड अभिषेक धारा गिरायी जाए तो पुत्र की अपमृत्यु टल सकती है । श्री शिव जी की कृपा से कुछ भी असम्भव नहीं है'' ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मुनि के वचनों को सुनकर राजा को कुछ आश्वासन मिला । राजा ने हजारों ब्राह्मणों को आमन्त्रित कर उनके द्वारा रूद्राभिषेक प्रारम्भ कराया । सातवें दिन दोपहर के समय सुधर्मा की मृत्यु हो गई ।

पराशर मुनि ने रूद्राभिषेक के तीर्थजल से सुधर्मा के मृत शरीर को सिंचित किया और पवित्र मन्त्रीकृत रूद्राक्ष के द्वारा कुछ तीर्थजल उसके मुख में डाला । शंकर जी की कृपा से राजकुमार के प्राण लौट आये पूछने पर राजकुमार ने बताया कि ''मुझे यमराज ले जा रहे थे, इतने में अकस्मात श्वेतकाय, जटाजूट धारी हाथ में त्रिशूल लिये एक तेजमयी मूर्ति ने यमराज को फटकारा और मुझे उनसे छुड़ा लिया । यमराज मुझे छोड़कर उनकी स्तुति करने लगा ।'' भगवान शिव की कृपा का अनुभव कर राज परिवार में आनन्द छा गया और सब लोग शिव भक्ति में लग गये और प्रतिमाह राजकुमार के साथ उपयुक्त शिव तीर्थो की यात्रा करने लगे ।

राजकुमार सुधर्मा और मन्त्रिपुत्र तारक ने शिव भक्ति का खूब प्रचार किया तभी से आज तक हजारों शिव भक्त इन तीर्थों में आकर शिव पूजन कर मनवांछित फल की प्राप्ति करते हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महाशिव रात्रि-व्रत

महाशिवरात्रि व्रत कहां से प्रचलित हुआ संक्षिप्त प्रसिद्ध कथा इस प्रकार है :-

कथा - क्षीर सागर में शयन करते भगवान विष्णु की नाभि से कमल की उत्पत्ति, कमल में ब्रह्मा जी का आविर्भाव । ब्रह्मा जी अपने को सर्वश्रेष्ठ मानकर अहंकार पूर्वक विष्णु जी से बोले "कि देखो मैं तुमसे बड़ा हूँ तभी तुमसे उच्च स्थान पर विराजमान हूँ" । ब्रह्मा-विष्णु एक दूसरे को छोटा कहकर आपस में वाद-विवाद में उलझ पड़े । वाद-विवाद बढ़ता ही गया । यहां तक की सारी सृष्टि में चारों ओर शोर होने लगा उसी समय दोनों के मध्य विशाल अग्नि के समान तेजस्वी स्तम्भ प्रकट हुआ जो आग की लपटों के सदृश महान तेजवाला था । उस स्तम्भ को देखकर ब्रह्मा और विष्णु दोनों चक्ति रह गये । दोनों ने स्तम्भ को आधार मानकर अपनी श्रेष्ठता की परीक्षा हेतु निर्णय लिया कि जो इस स्तम्भ के ओर छोर का पता पहले लगाकर आयेगा, वही श्रेष्ठ माना जायेगा । ब्रह्मा हंस पर सवार होकर उपर की ओर गये तथा विष्णु शूकररूप से नीचे की ओर गये परन्तु उस ज्योतिमय स्तम्भलिंग का और अन्त न पा सके । ऊपर की ओर से आते एक केतकी पुष्प को देखकर ब्रह्मा जी ने अपने साधन पूर्ति के हेतु उसी केतकी पुष्प को साक्षी रूप से मना लिया और कहा कि विष्णु से मेरी गवाही दे देना कि हम दोनों साथ ही आ रहे हैं । 'नीचे आकर विष्णु के सामने उपस्थित ब्रह्मा ने केतकी को अपना साक्षी दिखाकर लिंग के छोर का प्रमाण दे दिया । उसी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समय उस लिंग में से एक भयंकर शब्द हुआ जो दसों दिशाओं में व्याप्त हो गया । उस शब्द को सुनकर दोनों आश्चर्य चकित हो चारों, ओर दृष्टि दौड़ाने लगे तभी आवाज आई ''कि ब्रह्मा तुमने अपनी लड़ाई सिद्ध करते हुए भयंकर झूठ बोला है अत: जाओ जिस मुख से तुमने झूठ बोला है तुम्हारा वह मुख ही नहीं रहेगा और पृथ्वी पर तुम्हारी कहीं पूजा नहीं होगी और वह केतकी पुष्प जिसने तुम्हारी झूठी साक्षी दी है मुझे बड़ा प्रिय था पर आज से वह पूजा के योग्य नहीं रहा, इसके द्वारा अब मेरी पूजा नहीं होगी ।'' ब्रह्मा जी तथा केतकी पुष्प को इस प्रकार शाप देकर उसी तेजोमय लिंग रूप में से साकार रूप **भगवान शंकर** प्रकट हो गये । ब्रह्मा, विष्णु ने शंकर को प्रणाम कर योग्य पवित्र पदार्थों से उन की पूजा की ।

भक्ति की वृद्धि करने वाले शिव जी ने ब्रह्मा और विष्णु से प्रसन्न होकर कहा 'वत्स आज मैं इस दिवस में तुम्हारे पूजन और उत्सव से प्रसन्न हुआ हूँ, यह दिवस पवित्र होगा और यह तिथि हमारी परम प्रिय शिवरात्रि होगी । इस समय जो हमारे लिंग का पूजन करेगा वह पुरूष जगत में स्थित सर्गादि कर्मो को करने से समर्थ होगा ।''

निरन्तर एक वर्ष तक मेरा पूजन करने से जिस फल की प्राप्ति होती है वह फल केवल एक शिवरात्रि के पूजन से मिल जायेगा । इसी तथ्य को लेकर युगयुगान्तर से आज तक इस महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर दिन रात्रि निराहार रहकर अपने कल्याण की कामना से सभी नर नारी शिवलिंग का दर्शन पूजन करते आये हैं, संसार में मनुष्यों का कर्तव्य है कि शिवदेव को प्रसन्न करने के लिये प्रत्येक मास में चतुर्दशी के दिन इस व्रत को करना चाहिए ।

ॐ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महामृत्युंजय अभिषेक

भगवान श्री शिव जी के मृत्युंजय महामन्त्र से भारत के कोने कोने में अभिषेक किये जाते हैं । श्रावण मास में तो इसकी बहार देखने योग्य होती है । भगवान मृत्युंजय के जप ध्यान से मार्कण्डेय जी, राजा श्वेत, दधीच मुनि आदि के काल भयनिवारण की कथा शिव पुराण, स्कन्द पुराण – काशी – खण्ड, पद्मपुराण – उत्तर खण्ड – माद्यमाहात्म्य आदि में आती है । आयुर्वेद ग्रन्थों में भी मृत्युंजय योग मिलते हैं । मृत्यु को जीत लेने के कारण ही इन मन्त्र योगों को मृत्युंजय कहा जाता है ।

प्राचीन काल की बात है कि क्षुव नाम के एक प्रसिद्ध राजा महाप्रभावशाली मुनीश्वर दधीच के मित्र थे । एक बार दीर्घकाल की तपस्या के प्रसङ्ग में दोनों में विवाद हो गया । महामुनि का कहना था कि तीन वर्णो में से ब्राह्मण ही श्रेष्ठ है । इस पर राजा क्षुव ने अपने आपको उत्तम कहा । उसका कहना था कि राजा ही श्रेष्ठ होता है । यह सुनते ही महामुनि को गुस्सा आ गया और उन्होंने क्षुव के मस्तक पर प्रहार कर दिया । इस के जबाब में राजा ने वज्र से दधीच को काट डाला । भागर्ववंशधर दधीच ने गिरते समय शुक्राचार्य का स्मरण किया । फिर क्या था, शुक्राचार्य ने कटे हुये शरीर को मुड़ जोड़ दिया और उन्होंने उसे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महामृत्युंजय नामक श्रेष्ठ मन्त्र का विधि पूर्वक जप करने को कहा ।

महामुनि दधीच ने वैसे ही करना आरम्भ कर दिया । उस मन्त्र के जप और तपस्या द्वारा भगवान शंकर की अराधना करके दधीच ने महामृत्युंजय शिव को खुश कर लिया जैसे ही भगवान उनके सामने प्रकट हुए, महामुनि ने विधि पूर्वक प्रणाम किया । भगवान शिव ने मुनि से वर माँगने को कहा । दधीच ने कहा, ''देवों के देव महादेव ! मुझे तीन वर दीजिये जिसमें मेरी हड्डी वज्र की हो जाये, कोई भी मेरा वध न कर सके और तीसरे में सर्वत्र अदीन रहूँ भाव कि कभी मुझ में दीनता न आये । भोले शंकर ने उसी समय तथास्तु कह दिया ।

महामुनि दधीच राजा क्षुव के स्थान में गये और उनके मस्तक पर लात मारी । राजा क्षुव ने क्रोध में आकर वज्र से हमला किया परन्तु दधीच का कोई कुछ न बिगड़ा क्योंकि उनके पास तो महादेव का वर था । यह देख कर राजा क्षुव हैरान रह गये और वहां से भाग कर बन में जाकर इन्द्र के छोटे भाई मुकुन्द की अराधना आरम्भ कर दी । क्षुव की पूजा से गरूड़ध्वज भगवान मधुसूदन बहुत खुश हुए । राजा ने अपना अभिप्राय बताया । श्री विष्णु ने इस पर कहा कि महाराज ! मैं तुम्हारे साथ रहकर कुछ करना नहीं चाहता मैं अकेला ही तुम्हारे लिए दधीच को जीतने की कोशिश करूँगा ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्री विष्णु पंडित का रूप धारण कर दधीच के आश्रम पर गये । उन्हें देखते ही महामुनि ने कहा, ''आप क्या चाहते हैं ? मुझे पता है ! इसलिए अपने रूप को ग्रहण कीजिये और भगवान शंकर के स्मरण में लग जायें ।'' मैं देवाधिदेव भगवान शम्भु के प्रसाद से कही, कभी, किसी से भी नहीं डरता-सदा ही निर्भय रहता हूँ । इस पर श्री हरि ने मुनि को दबाने की कोशिश की परन्तु सफलता न मिली । तब भगवान ने अपनी विष्णु मूर्ति प्रकट की । इस पर दधीच ने फिर कहा, ''महावाहो, माया को त्याग दीजिये । आप मुझ में अपने सहित सम्पूर्ण जगत् को देखिये । मैं आपको दिव्य दृष्टि देता हूँ ।'' इसी के साथ उन्होंने भगवान शंकर की कृपा से अपनी देह में सारे ब्राह्माण्ड का दर्शन कराया । भगवान विष्णु ने उन पर फिर क्रोध करना चाहा कि इतने में राजा क्षुव आ पहुँचे । उन्होंने भगवान विष्णु तथा सभी देवताओं को क्रोध करने से रोका । तब राजा क्षुव अति दीन हो उन महामुनि दधीच के पास गये और उन्हें प्रणाम करके प्रार्थना करने लगे, ''हे मुनि श्रेष्ठ ! मुझ पर कृपा कीजिये ।'' मुनि ने उन पर अनुग्रह किया और कहा, ''राजा क्षुव, ब्राह्मण ही बली और प्रभावशाली होते हैं ।''

जब किसी भी कारण से रोगादि देह को स्वतंत्र न करते हो, प्राणों पर संकट बन जायें, घर में हमेशा कलेश होने लगे, परिवार में विघटन होने लगे, और घर में धन का अपव्यय अधिक होने लगे तब-तब महामृत्युंजय पाठ का अभिषेक अवश्य करवाना चाहिए । साधक को चाहिए कि किसी पवित्र स्थान में स्नान,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आचमन, प्राणायाम, गणेशस्मरण, के बाद इसका अभिषेक करवायें । इस मन्त्र के लिए ध्यान का स्वरूप अति जरूरी है । भगवान मृत्युंजय के आठ हाथ हैं । वे अपने ऊपर के दोनों कर कमलों से दो घड़ों को उठाकर उसके नीचे के दो हाथों से जल को अपने सिर पर उड़ेल रहे हैं । सब से नीचे के दो हाथों में भी दो घड़े लेकर उन्हें अपनी गोद में रख लिया है । शेष दो हाथों में वे रूद्राक्ष की माला तथा मृगी मुद्रा धारण किये हुए हैं । वे कमल के आसन पर बैठे हैं, उनके शिर : स्थ चन्द्र से लगातार अमृत वृष्टि के कारण उनका शरीर भीगा हुआ है । उनके तीन नेत्र हैं तथा उन्होंने मृत्यु को सर्वथा जीत लिया है । उनके वामाङ्ग भाग में गिरिराजनन्दिनी भगवती उमा विराजमान है । उनका मैं भजन इस तरह करता हूँ :-

ॐ हौं जूँ सः ; ॐ भूर्भुवः स्वः ।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।

उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ।।

स्वः भुवः भूः ॐ । सः जूं हौं ॐ ।

(यह सम्पुट-युक्त मन्त्र है ! इसका प्रायः सवा लाख जप सर्वार्थ साधक माना जाता है ।)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रार्थना

ॐ नमः शिवाय

जय देव जगन्नाथ जय शंकर शाश्वत, जय सर्व सुराध्यक्ष जय सर्व सुराचिंत ।
जय सर्व गुणातीत जय सर्व वरप्रद, जय नित्य निराधार जय विश्वम्भरा व्यय ।।
जय विश्वैक वन्द्येश जय नागेन्द्र भूषण, जय गौरीपते शम्भो जय नित्य निरञ्जन ।
जय नाथ कृपासिन्धो जय भक्तार्तिभञ्जन, जय दुस्तार संसार सागरोत्तारण प्रभो ।
प्रसीद मे महादेव, संसारादग्ध खिद्यत, सर्व पाप क्षय कृत्वा रजसां परमेश्वर ।
महादारिद्र्य मग्नस्य महापापहतस्य च, महाशोक निविष्टस्य महारोगातुरस्य च ।।
ऋण भारपरीतस्य दह्य मानस्य कर्मभिः, ग्रहैः प्रपीड्यमानस्य प्रसीद मम शंकर ।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं महेश्वरः, यत्पूजितं मयादेव परिपूर्ण तदस्तु मे ।।
आवहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम् पूजन नैव ध्यानामि तत्क्षमस्व सदा हर ।
।। अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरण मम ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ॐ नमः शिवाय

जिन बिन्दुसंयुक्त 'ॐ' कारका योगिजन सदा ध्यान करते हैं, उन सभी कामनाओं तथा मोक्षको भी प्रदान करने वाले 'ॐ'कारस्वरूप भगवान् सदाशिव को बार-बार नमस्कार है । जिन 'न'कारस्वरूप देवेश भगवान् सदाशिव को ऋषिगण, देवगण, सभी प्रकार की अप्सराओं के समूह तथा मनुष्यगण नमस्कार करते हैं, उन्हें बार-बार नमस्कार है । जो देवताओ में महान् हैं । सर्वश्रेष्ठ महात्मा भी हैं और जो सदा समाधि में लीन रहते हैं तथा जो सभी महापातकों का संहार कर देते हैं, उन 'म'कारस्वरूप भगवान्, सदाशिव को बार-बार नमस्कार है । जो विश्व के लिये परम कल्याणस्वरूप हैं, जिनका स्वरूप सदा शान्त है, जो सम्पूर्ण विश्व के स्वामी हैं और समस्त लोकों पर अनुग्रह करने वाले हैं और जो अपने शुद्ध एवं नित्य एक स्वरूप में ही परिनिष्ठत रहते हैं, उन 'शि'कारस्वरूप भगवान् सदाशिव को बार-बार नमस्कार है । जिनका वाहन साक्षात् धर्मस्वरूप वृषभ है और जिनके कण्ठ का अभूषण नागराज वासुकि हैं, जिनके वाम भाग में आदिशक्ति गिरिजा स्थित हैं, उन 'व'कारस्वरूप भगवान् सदाशिव को बार-बार नमस्कार है । जो ईश्वर के भी स्वामी भगवान् महेश्वर सम्पूर्ण विश्व में-कण-कण में सर्वत्र व्याप्त हैं और जो सभी देवताओं के परमपूज्य गुरू हैं, उन 'य'कारस्वरूप भगवान् सदाशिवको बार-बार नमस्कार है । जो मन्त्रराज के छः अक्षरों पर विनिर्मित इस षडक्षर (ॐ नमः शिवाय) स्तोत्र का भगवान् शिवकी संनिधि में पाठ करता है, वह भगवान् सदाशिव के लोक को प्राप्त कर उनके साथ आनन्दपूर्वक निवास करता है ।